प्रश्न: क्या यह बात बन सकती है की कोई हमें बिना कहे सुन ले ?

हक़ीक़त में यह बात हर पल घट रही है, "वह" हर पल हमें सुन रहा है, पर हम उनसे मुँह मोड़े हुवे है, हम मर क्यूँ नहीं रहे है क्योंकि हम जीना चाहते है, कई लोग है जो सुसाइड करते है, कोई सुसाइड तब करता है जब वो जीना **नहीं** चाहता हो, पर हम तो जी रहे है, हमारी जीने की चाहत है, पर क्या श्वास इसलिए चलती है क्योंकि हम जीना चाहते है, हम श्वास लेने के लिए कोई प्रयत्न कर रहे है? नहीं ना....? यह श्वास तो बिना जानकारी के चल रही है, इसका मतलब तो यह हुवा की हम जीना चाहते है यह हमारी मर्ज़ी के साथ "उनकी" भी मर्ज़ी जुड़ी हुई है, इसलिए तो "वह" श्वास चला रहा है, तो क्या हम ऐसा नहीं कह सकते की "वह" हमें बिना कहे सुन रहा है? हमने कोई ऑर्डर तो दिया हुवा नहीं है की मुजे जीना है आप मेरी श्वास चलाओ, अगर ऐसा होता तो कोई मरना तो चाहता ही नहीं है, पर फिर भी मृत्यु हो जाती है, इसका मतलब यही होता है की जीवन जीने की हमारी मर्ज़ी के साथ "उनकी" मर्ज़ी भी जुड़ी हुई है, जीवन जीने की हमारी मर्ज़ी हो पर जब उनकी मर्ज़ी नहीं होगी तब श्वास रुक जाएगी, पर हमारे साथ ऐसा नहीं हुवा है क्यूँकि "वह" हमें बिना कहे सुन रहा है।

Aasthit